ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March (Supplementary Issue)-2018
Innovation The Research Concept

# आधुनिक व्यापार में विश्व के नैतिक मूल्य

**सुनीता शर्मा**
ऐसोसिऐट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
प्रेम चन्द मारकण्डा एस.डी कालेज फॉर वूमैन,
जालन्धर

**सारांश**

नीतिशास्त्र में मूल्य शब्द का क्या अर्थ है और नैतिक दृष्टि से मानव जीवन में विभिन्न प्रकार के मूल्यों का क्या महत्त्व है 'मूल्य' शब्द का सही सर्वमान्य परिभाषा करना बहुत कठिन है मूल्य शब्द किसी बौधिक वस्तु अथवा मानसिक अवस्था के उस गुण का बोध कराता है जिसके द्वारा मनुष्य किसी न किसी आवश्यकता या इच्छा की तृप्ति होती है। मूल्य जीवन के रक्षक और विकास में सहायक है। वह आत्म साक्षात्कार और आत्म विकास की ओर ले जाता है।

**मुख्य शब्द :** आधुनिक व्यापार, नैतिक मूल्य

**प्रस्तावना**

मूल्य वह है जिसका महत्त्व है जिसको पाने के लिए व्यक्ति और समाज चेष्ठा करते है जिनके लिए वे जीवित रहते है और जिसके लिए वे बड़े से बड़ा त्याग कर सकते है। मूल्य वह है जिनका व्यावहारिक उपयोग है जिसका विनिमय किया जा सकता है। इच्छाओं की पूर्ति करने वाली वस्तुए मूल्यवान है। नीतिशास्त्र मूल्य की गुणात्मक व्याख्या करता है।

नैतिक मूल्य मानव के जीवन पर निर्भर करता है जब भी जीवन में उसकी परिस्थितियों में परिवर्तन आता है तभी मनुष्य के नैतिक मूल्य बदलते है मानव के जीवन में आतंरिक और बाहय दो पक्ष है। मानव के जीवन मे सोचने की विधि और दृष्टिकोण, इच्छाओं को तष्प्त करने के स्तर, योग्यताओं व गुणों का विकास कलात्मक व धार्मिक अनुभूतियां मानव के आन्तरिक जीवन को बनाती है इस परिवर्तन आने से नैतिक मूल्यों मे परिवर्तन आना अनिवार्य हो जाता है। आन्तरिक परिवर्तन व विकास के साथ मानव की संस्कृति सम्बन्धित है। बाहय परिवेश मानव के बाहय जीवन को प्रभावित करता है। बाहय जीवन में सामाजिक जीवन संस्थाएं राजनैतिक तन्त्र तकनीकी, व्यवसाय द्वारा उत्पन्न हुई भौतिक स्थितियां महत्त्वपूर्ण है। आधुनिक युग में अनेक और गम्भीर परिवर्तन आए है जीवन मे बाध्य और आन्तरिक पक्षों को अलग रखना असम्भव है क्योंकि इनका एक दूसरे पर प्रभाव पड़ना जरूरी है। मानव अपने आन्तरिक गुणों का विकास अपने बाहय परिवेश के साथ करता है नैतिक मूल्य आन्तरिक गुणों व आन्तरिक जीवन के साथ सम्बन्धित है इस प्रकार बाहय परिवेश व भौतिक, राजनीतिक सामाजिक परिवर्तन के साथ आन्तरिक जीवन, दृष्टिकोण, गुण व चरित्र बदलता है। जो मानव के नैतिक मूल्यों के परिवर्तन का कारण बनता है।

आधुनिक युग में मानव के जीवन में, उसकी सामाजिक व भौतिक परिस्थितियों में अत्यधिक परिवर्तन आए है। इसीलिए विज्ञान के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति, आधुनिक तकनीकी का विकास, व्यवसाय, यातायात के गतिवान साधन, आर्थिक व्यवस्था का पुनर्गठन औद्योगीकरण व समाज के नवीन क्षेत्रों का प्रादुभाव समाचार पत्र व दूरदर्शन आदि समूह प्रसारण के शक्तिशाली माध्यमों का विकास राष्ट्रवाद का तीव्र रूप आदि है। मानव जीवन के बाहय रूप को बदल कर आधुनिक युग के लिए एक विशाल सभ्यता का निर्माण किया है उनके प्रभाव के अधीन मानव के सोचने का तरीका इच्छाओं पर संयम, धन व सुख की लालसा, व्यवसाय के नए कर्त्तव्य अधिक अवकाश होने से मनोरंजन की नवीन विधियां और नवीन अनुभवों व क्षितिजों की खोज आदि में परिवर्तन आए है। जिन्होंने मानव के नैतिक मूल्यों को बदल दिया है नैतिक मूल्यों का सम्बन्ध जीवन के मूल्यों से होता है और साधारण मूल्यों के प्रति निष्ठा व कर्त्तव्य भावना से उत्पन्न होते है। एक ओर मूल्य है दूसरी तरफ मानव का प्रशसात्मक स्वभाव है। नवीन मूल्यों से नवीन कर्त्तव्य भावना व नैतिकता का होना अनिवार्य है। जीवन में परिवर्तन से नैतिक मूल्यों बदलते है और नैतिक मूल्यों के परिवर्तन से मनुष्य के मूल्य उतरते है जिससे मनुष्य का जीवन ऊपर जाता है आज के युग में सभ्यता और संस्कृति में परिवर्तन आए है उसी से प्रभावित मनुष्य के जीवन में नैतिक

मूल्यों के परिवर्तन आए हैं कोई समय था जब मनुष्य केवल रीति–रिवाजों को माना करते थे पर आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति सोच–विचार की शक्ति का प्रयोग करता है और किसी भी बात को ज्यों का त्यों नहीं मानता है। इन्हीं बदले हुए नैतिक मूल्यों को प्रकट किया जा सकता है।

आधुनिक नीति इच्छा की स्वतन्त्रता पर आधारित है इसमें किसी पर भी कोई दबाव नहीं डाला जा सकता कि वह अपनी इच्छा के विरूद्ध करें। उसे अवसर दिया जाता है कि वह घटना और वस्तु का अच्छी तरह से निरीक्षण कर उसके बाद ही कदम उठाए। विज्ञान व तकनीकी की सफलता व उपयोगिता ने मनुष्य के मन से सत्य की खोज के लिए एक नवीन उत्साह व आत्म–विश्वास भर दिया है वह मानव स्वभाव व प्रकृति के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। सत्य की खोज में मनुष्य में एक नवीन निष्ठा उत्पन्न की है वह सत्य के प्रति नैतिक कर्त्तव्य आज मनुष्य सत्य और शुद्ध सत्य को प्राप्त करना चाहता है वह भ्रमों व स्वप्नों से लुभाने वाला नहीं रहा। मनुष्य सत्य को अनुभूतियों, संवेगों व भावनाओं पर निर्भर नहीं है पर वस्तुपरक सत्य ही मानव की वैज्ञानिक आत्मा को शान्त कर सकता है। आत्मपरक सत्य को त्यागना चाहता है। सत्य के प्रति निष्ठा व कर्त्तव्य ने मानव के सोचने के ढंग को बदल कर रख दिया है। उसका दार्शनिक दृष्टिकोण भी बदल गया है। इनका प्रभाव नैतिक जीवन पर पड़ा है सत्य मनुष्य का एक उच्च मूल्य के रूप में सामने आया है और वस्तुपरक सत्य के लिए मानव नैतिक रूप से कटिबद्ध हो रहा हैं पर वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नैतिकता के लिए भी तथ्यों का प्रमाण ढूढ़ता है और ऐसी नैतिकता को गलत समझता है जो वस्तु परख ना हो।

प्रत्येक व्यक्ति को किसी व्यवसाय के कर्त्तव्यों को पूरी तरह कुशलता पूर्वक निभाने के लिए विशेषज्ञ ही नहीं बल्कि उस व्यवसाय के विशेष नैतिक नियमों का पालन भी करना होगा, नहीं तो वह भला व्यक्ति होता हुआ भी व्यवसाय के मापदण्डों पर पूरा न उतर कर मानवता के प्रति विश्वासघात करता और उसके हित को हानि पहुंचाता है। आज का नीति शास्त्र विभिन्न व्यवसायों के लिए एक साधारण नियम तैयार करता है जिसका पालन करना प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक कर्त्तव्य भी है नियम द्वारा व्यक्ति अपने व्यवसाय के प्रति स्वामी भक्ति रख सकता है प्रत्येक व्यवसाय में विशेष कर्त्तव्य होना चाहिए जो उसके विलक्षण है, इनका पालन करना मनुष्य का नैतिक कर्त्तव्य है। व्यवसाय के कर्त्तव्यों के पालन से व्यक्ति न केवल अपनी भलाई करता है बल्कि समस्त मानवता का भी कल्याण करता है।

आधुनिक युग में प्रत्येक व्यक्ति अपने पर विश्वास करना चाहता है कार्य के अभीष्ट परिणामों को उत्पन्न करके उनका फल भोगना चाहता है मनुष्य अपनी शक्तियों व योग्यताओं पर विश्वास करता है वह शुभ करता है तो उसका श्रेय भी स्वयं लेना चाहता है यदि वह बुरा कार्य करता है तो उसका उतरदायित्व किसी अन्य पर नहीं अपने पर लेता है। यह नैतिक आत्म स्थापना आज के मानवता वाद का फल है। यह नैतिक उतरदायित्व का अहसास मानव को नवीन उत्साह व क्रियाशीलता से भर देता है। कार्य में निष्ठा मनुष्य को आशावाद से भर देती है यह आशा एक उज्ज्वल भविष्य में निष्ठा है। आज मनुष्य समय को जीवन का सबसे बड़ा मूल्य मान कर उसे अपने प्रयत्न व परिश्रम द्वारा ठोस फलों में बदलता है। कार्य निष्ठा मनुष्य के समयवाद पर निर्भर है। इस प्रकार आत्म विश्वास, उत्साह, कार्य–निष्ठा, आशावाद व समय आधुनिक युग के मूल्य है।

मनुष्य आज जीवन को सफल पाने के लिए परिश्रम करता है और वह दिन–रात परिश्रम करता है कि जीवन में सुखी हो सके। यह सुख किसी एक इच्छा की पूर्ति नहीं है बल्कि जीवन की सभी आवश्कताओं को पूरा करने में है। जिनमें भौतिक और सामाजिक जरूरतें है। वह परिश्रम से धन कमाता है वहीं उसका सबसे बड़ा मूल्य है धन से वह प्रत्येक सुख को खरीदना चाहता है। धन से घर, भोजन व वस्त्र एकत्रित करता है। सुख–सुविधा को प्राप्त करना आधुनिक जीवन का एक सर्वश्रेष्ठ अंग बन चुका है। आज मनुष्य भौतिक मूल्यों को अत्यधिक महत्त्व देता है। इसी लिए मनुष्य की संस्कृति भौतिक बन चुकी है। सुख की प्राप्ति को जीवन का उददेश्य मानना नैतिक सुखवाद है। परिश्रम व सुख आधुनिक जीवन के दो महत्त्वपूर्ण मूल्य है।

आधुनिक युग में मनुष्य के नैतिक दृष्टिकोण अधिक आन्तरिक हो रहे है। पुरातन युग में यह दृष्टिकोण बाहय था। मनुष्य बाहय जीवन व व्यवहार को आन्तरिक जीवन की अपेक्षा अधिक महत्त्व देता था। किसी भी मनुष्य को भला–बुरा कहने से पहले उसके चरित्र के स्थान पर उसके व्यवहार को देखा जाता था, नैतिक कार्य के प्रेरकों की अपेक्षा उसके परिणामों के आधार पर किया जाता था। यदि कोई बाहय व्यवहार से किसी नियम का पालन करें तो वह सामाजिक दृष्टिकोण से पर्याप्त समझा जाता था पर आज नैतिक दृष्टिकोण आन्तरिक हो गया है। आज आचार की अपेक्षा चरित्र को, परिणाम के स्थान पर प्रेरक को अधिक मूल्यवान माना जाता है। नियम के आन्तरिक पालन व कर्त्तव्य भावना को अधिक महत्त्व दिया जाता है। यही अन्तरीकरण नैतिक दृष्टिकोण के आध्यात्मिक बनने के चिन्ह है। आन्तरिक मनुष्य ही वास्तविक मनुष्य है इस पर अस्तित्व वादी दर्शन ने जोर दिया है।

विचारात्मक नीति की विशेषता है कि वह किसी भी घटना रीति रिवाज था परम्परा पर अन्धविश्वास नहीं किया जाता। प्रत्येक रीति रिवाज को अच्छी तरह से परखा जाता उसके बाद वह अच्छा हो तो मान लिया जाता, न तो छोड़ दिया जाता। आज मनुष्य अपने नैतिक दृष्टिकोण को किसी विशेष विश्वास व प्रथा से बांधने को तैयार नही। वह रूढ़िवादी नैतिकता को अन्धी समझता है वह नैतिक जीवन में मुक्त व उदारता से काम लेना पसन्द करता है। वह सामाजिक परिपाटी व प्रचलित प्रथा को छोड़ कर व्यक्तिगत निर्णय पर निर्भर होना चाहता है आज मनुष्य सद्गुण को व्यवहार से अधिक महत्त्व देता है वह प्राचीन सद्गुणो को भी छोड़ना चाहता है जो कूर व कर्कश थे जैसे वीरता का अर्थ व्यक्ति की हत्या करने की शक्ति समझी जाती थी पर आज कठोर गुणों के बदले कोमल व नम्र गुण अपनाता है जैसे – सेवा, सहानुभूति,

सहयोग, प्रेम, अहिंसा आदि। नैतिक उदारता नैतिक जीवन के क्षेत्र को अधिक विशाल बनाती है और उनके उन्मुक्त अर्थ निकालती हुई आत्म सयंम को कामेच्छा पर नियन्त्रण ही नही बाकि सभी भी इच्छाओं का संयम है। इसीलिए आज नैतिक दृष्टिकोण अधिक विस्तृत कोमल और उदार हो गया है।

आज मनुष्य चिन्तण विधि वैज्ञानिक खोज की विधि से प्रभावित है पूर्व तथ्यो के आधार या प्रमाण चाहता है पर नैतिक निर्णय व नैतिक मूल्यों के लिए वस्तुगत तथ्यों के रूप में कोई प्रमाण नहीं है। मूल–कथन तथ्य कथनों से अलग है। यह कार्य है। यह तो तथ्य हो सकता है, पर यह भला कार्य है, तथ्य नहीं। एक व्यक्ति को नैतिक अनुभूति की अभिव्यक्ति है। सभी मूल्य निर्णय निरर्थक है क्योकि इन तथ्यों के आधार पर परीक्षण नहीं हो सकता। ये केवल मनुष्य के संवेगो को प्रकट करते है वे समस्त नीतिशास्त्र सौन्दर्य शास्त्र व धर्म शास्त्र को भ्रम पर आधारित मानते हुए बेहूदा कह देते है। आज का मनुष्य नैतिक मूल्यो के प्रति अविश्वास का भाव रखने लगा है सभी नैतिक कत्तव्यों के प्रति निष्ठा व भावना शिथिल हो गई है। हमने जीवन में मूल्यहीनता और नैतिक अनुत्तरदायित्व उत्पन्न कर दिया है। नैतिकता को आत्मपरक व सांवेगिक सिद्व करना ही मानव की नैतिक उदासीनता का कारण है और आज का मानव वैज्ञानिक दर्ष्टिकोण को त्याग भी नही सकता। इस प्रकार से वह नैतिक रूप से अत्यधिक अनुत्तरदायित्व की ओर बढ़ रहा है।

मनुष्य को आधुनिक नैतिक उदासीनता सन्देहवाद ने रचनात्मकता के स्त्रोत को शुष्क नहीं किया बल्कि मनुष्य नैतिक क्षेत्र में अधिक रचनात्मक हो गया है। यह एक प्राचीन अवस्था है कि वह प्राचीन मूल्यो के प्रति निष्ठा नहीं रखता न ही प्रेरणा लेता और अभी से आदर्शो की अपेक्षा उसके सामने उभरती नहीं है। नैतिक सन्देहवाद ने मनुष्य को भटका कर नवीन दिशाए खोजने के लिए प्रेरित किया है वह अपने अनुभव के क्षेत्र को अत्यधिक विस्तृत करके नए क्षितिजों को ढूंढ़ रहा है। सभ्यता से ऊब कर नवीन अनुभव ढूढ़ता है। इस प्रक्रिया ने मानव को अधिक रचनात्मक बना दिया है। रचनात्मक नैतिक क्षेत्र के इलावा कला और साहित्य के क्षेत्र में भी नयी प्रवृतियों को जन्म देती है आज मनुष्य को अत्यधिक अवकाश प्राप्त है जिसका प्रयोग वह सांस्कृतिक निर्माण व नैतिक उत्थान के लिए न अधिक रचनात्मक बन सकता है, साथ ही नवीन मूल्यों को जीवन में धारण कर सकता है तभी वह नैतिक प्रगति कर सकता है।

**उद्देश्य**

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य आधुनिक व्यापार में विश्व के नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना है।

**निष्कर्ष**

इस प्रकार से हम कह सकते है कि मनुष्य की प्रवृति के आधार पर ही कुछ शाश्वत मूल्य है जिनको सेहत, ज्ञान, बुद्धिमता, सुख साहस, ईमानदारी, मित्रता कृतज्ञता प्रेम, सौन्दर्य आदि के रूप में पहचाना गया है पर आज का मानव शान्ति ज्ञान, साहस, दयालुता, प्रेम सहयोग सम्मान निःस्वार्थ व्यक्तित्व, सहानुभूति व भलाई की ओर अधिक बढ़ रहा है और यही आधुनिक युग के बदलते मूल्य है। वास्तव में मूल्यवाद पूर्णतवाद को ही एक नवीन रूप में रखता है। उसका आधार पूर्ण आत्मा का साक्षात्कार है उसकी केवल यही विशेषता है कि उसने 'मूल्य' शब्द का प्रयोग करके आकारवादी और प्रयोजनवादी, यथार्थवादी और आदर्शवादी सिद्धान्तों का समन्वय किया है अन्यथा यह एक नवीन रूप से पूर्णतावाद ही है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *डॉ रामनाथ शर्मा, नीति शास्त्र की रूपरेखा, केदारनाथ रामनाथ, मेरठ,*
2. *जोशी, शान्ति, नीति शास्त्र बनारस ज्ञान मण्डल लिमिटेड–1956.*
3. *झा और मिश्र, आचार शास्त्र के मूल सिद्धान्त, इंडियन प्रैस प्राइवेट लिव इलाहाबाद, 1968.*
4. *डॉ जे. एन. सिन्हा नीतिशास्त्र, जय प्रकाश नाथ एण्ड कम्पनी, मेरठ,–1973.*
5. *बान्ट, आर.बी., ऐथिकल थिपरी, प्रेंटिस हॉल, इनकॉरपोरेटेड, एंगलवुड, क्लिप्स, 1950.*
6. *लिली विलियम, ऐन इन्ट्रोडक्शन टुऐथिक्स, मैथ्युएन एंड कम्पनी लिव लन्दन,–1948.*
7. *रोजार्न आ. ए. पी. ए. शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ एथिक्स मैकमिलन एंड कम्पनी लिव न्यूयार्क, 1911.*
8. *मूर जी. ई. एथिक्स, आर्क्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस न्यूयार्क–1965.*
9. *सेठ, जे, ए स्टडी ऑफ ऐथिकल प्रिंसीपल, डब्ल्यू. एम वलैक वुड एण्ड सन्स लण्डन, 1908.*